त्रैमासिक

# दिग्विजय कैम्पस

राजनांदगांव, जनवरी–मार्च 2019 वर्ष–2, अंक–9 (आंतरिक वितरण हेतु)


# दिग्विजय कॉलेज में दीक्षांत एवं पदक वितरण समारोह संपन्न

## मुख्यमंत्री ने छात्रावास और ऑडिटोरियम विस्तार के लिए दिये निर्देश

**01 फरवरी 2019 । प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के मुख्य आतिथ्य और पूर्व सासंद माननीया श्रीमती करुणा शुक्ला की अध्यक्षता में आज शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय का 61वां दीक्षांत एवं पदक वितरण समारोह गरिमामय ढ़ग से संपन्नहुआ। इस अवसर पर विभिन्न कक्षाओ में उत्कृश्ट स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो को स्वर्ण पदक सहित खिलाड़ियों एवं प्राध्यापको को उनके विशेष कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। इस अवसर पर महाविद्यालय द्वारा मुख्य अतिथि महोदय को अभिनंदन पत्र प्रदान कर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीया श्रीमती करुणा शुक्ला ने महाविद्यालय के विद्यार्थियों को जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने तथा उसके अनुरुप कार्य योजना तैयार करने की सीख दी।**

समारोह मे विशिष्ठ अतिथि के रुप में डोंगरगांव विधायक माननीय श्री दलेश्वर साहू, खुज्जी विधायक माननीया श्रीमती छन्नी साहू, डोंगरगढ़ विधायक माननीय श्री भुनेश्वर बघेल सहित जिलापंचायत अध्यक्ष माननीया श्रीमती चित्रलेखा वर्मा, समाजसेवी माननीय श्रीदिनेश शर्मा, माननीय श्री नवाज खान, माननीय श्री निखिल द्विवेदी, माननीय श्री कुलदीप छाबड़ा (पार्षद), श्री आकाश शर्मा सहित नगर के प्रतिश्ठित नागरिक, अभिभावक और पूर्व छात्र/छात्राए उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री बनने के बाद पहली बार महाविद्यालय के समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में पधारे, माननीय श्री भूपेश बघेल जी का स्वागत महाविद्यालय के मुख्य द्वार से लेकर मंच पर पहुंचने तक राउत नाचा, स्वस्ति वाचन और एन. सी.सी. कैडेट द्वारा गार्डस ऑफ आनर के साथ किया गया। सरस्वती पूजन एवं वंदना, स्वागत गान के बाद संस्था प्रमुख प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने सबसे पहले मुख्य अतिथि सहित मंचासिन अतिथियों का महाविद्यालय परिवार की ओर से स्वागत किया। इसके बाद महाविद्यालय के वरिश्ठ प्राध्यापकों , रजिस्ट्रार एवं कर्मचारियों ने मुख्य अतिथि को पुष्प गुच्छ प्रदान कर स्वागत किया। जिला प्रशासन की ओर जिला कलेक्टर श्री भीम सिंह और पुलिस कप्तान श्री कमल लोचन कश्यप ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया।

**याद आये विजय पाण्डे**–मुख्यमंत्री मंच पर बोलने के लिए खडे हुए तो उन्होने महाविद्यालय के पूर्वछात्र, (पूर्व महापौर) स्व. श्री विजय पाण्डे जी को याद करते हुए भाव विहवल हुए। उन्होंने कहा कि आज पाण्डेय जी होते तो इस मंच पर उनकी उपस्थिति से समारोह की गरिमा बढ़ जाती।

इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिए प्रदेश में वित्तीय संकट नहीं होगी। आपने महाविद्यालय में छात्रा वास निर्माण, ऑडिटोरियम विस्तार और सोमनी कालेज में अध्यापन कार्य संचालित करने के निर्देश दिये। उन्होनें कहा कि देश के समस्त महाविद्यालयों में शिक्षकों की कमी दूर करने के लिए 1500 प्राध्यापकों की भर्ती की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गइ है। इसी प्रकार प्रदेश के सभी जिलों में रोजगार परक प्लांट लगाने की दिशा में नई सरकार कार्य करना शुरु कर दिया है।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने अपने स्वागत संबोधन में कहा कि यह महाविद्यालय रोजगार परक शिक्षा के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है। यहां 5078 नियमित विद्यार्थियों सहित लगभग 9000 स्वाध्यायी विद्यार्थियों के साथ अध्यापन कार्य संचालित है। इसलिए अध्यापन कक्ष का विस्तार जरुरी है।

समारोह में मनोनीत छात्रसंघ अध्यक्ष कु. सरस्वती जैन ने अपने संबोधन में माननीय मुख्यमंत्री का ध्यान आर्कशित करते हुए साइकल स्टैण्ड के विस्तार की मांग की। समाज सेवी श्री निखिल द्विवेदी ने कहा कि नई सरकार प्रदेश के शिक्षण संस्थाओं में व्याप्त प्राध्यापकों की कमी दूर करने की प्रक्रिया शुरु कर दी है।

**महंत राजा दिग्विजय दास स्मृति पुरस्कार –** मंहत राजा दिग्विजय दास की स्मृति में प्रत्येक वर्श महाविद्यालय द्वारा दिये जाने वाला प्रदेश स्तरीय निबंध प्रतियोगिता का पहला पुरस्कार साइंस कालेज दुर्ग की छात्रा भूमिका तिवारी को, दूसरा पुरस्कार पी.जी. कालेज जगदलपुर की छात्रा अरुणिमा वासूराय, तथा तीसरा पुरस्कार रायपुर के बजरंग महिला दूधाधारी की छात्रा कु. श्रुति मिश्रा को प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वरुप इन्हें क्रमशः सात हजार पॉच हजार एवं तीन हजार की राशि सहित प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये।

**अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान के लिय विशेष सम्मान–**

महाविद्यालय में विशेष अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान के क्षेत्र में किये गये महत्वपूर्ण कार्य के लिए हिन्दी विभाग को प्रथम, प्राणी शास्त्र को द्वितीय एव रसायन शास्त्र को तृतीय स्थान प्रदान करते हुए प्रशस्ति पत्र और पुरस्कार राशि प्रदान की गई।

**बेस्ट लाईब्रेरी यूजर पुरस्कार –** ग्रंथालय में सर्वाधिक पुस्तकों के अध्ययन और उसके उपयोग के लिए डॉ. संजय ठिसके, डॉ. एच.एस. अलरेजा को सम्मानित किया गया।

**रामचंद्र मिशन सम्मान –** रामचंद्र मिशन द्वारा आयोजित राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करनेवाले महाविद्यालय के पांच विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

इस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ संयोजक के लिए प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह और डॉ. चन्द कुमार जैन को संस्था से प्राप्त प्रशस्ति पत्र मुख्यमंत्री के हाथों प्रदान किया गया। माननीय मुख्य अतिथि महोदय ने प्रावीण्यता प्राप्त विद्यार्थियों को स्वर्ण मंडित पदक प्रदान किये।

साथ ही इन्होंने एड–ऑनकोर्स के विद्यार्थियों को भी प्रमाण पत्र वितरित की और उन्हें शुभकामनाए दी। सम्या भाव के कारण मुख्य अतिथि के जाने के बाद शेष स्वर्ण पदक प्राचार्य डॉ.आर.एन. सिंह के हाथों वितरित किये गये। समारोह के अंत में महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इसमें एकल गीत, समूहगीत, एकलनृत्य, समूहनृत्य, नाटक, प्रहसन एवं मिमिक्रि जैसे रोचक कार्यक्रम का आनंदनगर के प्रबुद्ध जनोसहित युवक युवती, बच्चे ने उठाये। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने सभी के प्रति आभार प्रकट किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. चन्द्रकुमार जैन ने अत्यंत ही रोचक एवं प्रभावशाली ढ़ग से किया।

# नासा के वैज्ञानिक सहित विद्वानों ने किया विद्या परम्परा और साहित्य पर मंथन

**21 जनवरी : प्रथम दिन : दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा 'संस्कृत में ज्ञान–विज्ञान' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोश्ठी का उद्घाटन आज नासा के वैज्ञानिक डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय के मुख्य आतिथ्य और महारानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के पूर्व डीन डॉ. रहस बिहारी द्विवेदी की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर कमला देवी राठी महिला महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सुमनसिंह बघेल और विज्ञान महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ गंधे वरी सिंह वि िश्ट अतिथि के रूप में विद्यमान थीं।**

मां सरस्वती की पूजा अर्चना के बाद अतिथि सत्कार हुआ और प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने संस्था की ओर से अतिथियों का स्वागत संबोधन किया। संगोश्ठी की संयोजिका डॉ. दिव्या देशपाण्डेय ने संगोठी के उद्दे य पर प्रका ा डाला।

मुख्य अतिथि डॉ. ओम प्रका ा पाण्डेय ने अपने संबोधन में संदे ा दिया कि ि ाक्षक को कर्मचारी बनने की बजाय ि ाक्षक बनना जरूरी है। आपने ि ाक्षकों से अपील की कि वे विद्यार्थियों को पढ़ाने की बजाय सीखाने की तकनीक विकसित करें। संस्कृत वांगमय मेंज्ञान–विज्ञान की चर्चा विशय पर आधारित इस संगोश्ठी में मुख्य अतिथि ने वेद, पुराण, रामायण और महाभारत जैसे संस्कृत ग्रंथों में व्याप्त वैज्ञानिक तथ्यों की सप्रमाण व्यख्या की। आप ने बताया कि किस प्रकार पृथ्वी के गोल होने का और गुरुत्वाकर्शण के सिद्धांत का प्रमाण ऋग्वेद में है। दूसरे सत्र में डॉ. रहस बिहारी द्विवेदी ने अपने व्याख्यान में संस्कृत ग्रंथों में उल्लेखित जीवन द र्ान को सहज और व्यावहारिक ढंग से समझाया। द्वितीय तकनीकि सत्र डॉ. सत्येन्दु भार्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ जिसमें कुल दस प्रतिभागियों ने अपने भोाध पत्रों का वाचनकिया। इसमें वर्धा, रायपुर, दुर्ग, भिलाई, रायगढ़ तथा खरौद से आये

प्रतिभागियों ने अपने भोाधपत्र पढे। दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी विभाग में भोाधरत दो छात्र भाालीन कुमार और मनीश कुमार ने भी अपने भोाध पत्रों का वाचन किय .....

**दूसरेदिन :** इस दोदिवसीय राश्ट्रीय भोाध संगोश्ठी का समापन, दो सत्रों में अतिथि वक्तव्यों तथा भोाध पत्रों के वाचन के साथ गरिमामय वातावरण में हुआ। प्रथम सत्र की अध्यक्षता इंदिरा कला संगीत वि ववविद्यालय, खैरागढ़ की संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. पूर्णिमा केलकर ने की। मुख्य वक्ता डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय वि व विद्यालय, सागर के प्राध्यापक डॉ. नौनिहाल गौतम थे।प्रारंभ में प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने आगंतुग विद्वानों का स्वागत भाल श्रीफल से करते हुए संगो ठी की पृश्ठ भूमि बतलाई।

समापन दिवस पर प्रथम सत्र में डॉ. भांकर मुनि राय ने रामचरित मानस में संस्कृत ग्रंथों का उल्लेख करते हुए तुलसी के नानापुराण निगमागम का उल्लेख किया। डॉ. हरनाम सिंह अलरेजा, पूर्वछात्र कैला ा कुमार और पूजा चौधरी ने संस्कृत साहित्य के विविध पक्षों पर सारगर्भित व प्रभारी भोध पत्र वाचन किया। मुख्य वक्ता डॉ. नौनिहालगौतम ने संस्कृत ग्रंथो में आयकर विशय पर दुर्लभ विचार व्यक्त किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, पूव कुलपति राश्ट्रीय संस्कृत संस्थान ने संस्कृत विद्या परम्परा पर वि िश्ट व्याख्यान दिया। उन्होंनें ऐतिहा. सिक दृश्टि से विद्या परम्परा को चार खण्डों में विभाजित कर उनकी वि ोशताओ एवं उपलब्धियों पर प्रका ा डाला। अतिथि वक्ता डॉ. महे ा चन्द्र भार्मा ने संस्कृत साहित्य मे राजनीति विशय पर तर्क सम्मत व्याख्यान दिया। आयोजन में अभ्यागत अतिथियों का स्वागत वरिश्ठ प्राध्यापक और कला संकाय की डीन डॉ. चंद्रिका नाथवानी ने किया।प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण एवं आभार प्रद र्ान संगोश्ठी की संयोजिका डॉ. दिव्या दे ापाण्डे ने किया। समापन प्रसंग का संच. ालन डॉ. ललित प्रधानआर्य एवं डॉ. राघवेन्द्र भार्मा ने संस्कृत में किया।

# रविशंकर विवि के दीक्षांत में दिग्विजय के बारह लोगों को एवार्ड हुई पीएचडी उपाधि

**04 मार्च 2019 :** पंडित रविशंकर शुक्ल वि वशविद्यालय, रायपुर के 14वें दीक्षांत समारोह में दिग्विजय महाविद्यालय के कुल आठ प्राध्यापकों सहित चार शोद्य छात्रों को पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। वाणिज्य संकाय के सहायक प्राध्यापक श्री संतोश उइके को छत्तीसगढ़ के ग्रामीण विकास में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की भूमिका' विषय पर और अर्थशास्त्र की सहायक प्राध्यापक श्रीमती मीना प्रसाद को 'ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में पंचायती राजव्यवस्था की भूमिका' विषय पर अनुसंधान कार्य के लिए यह उपाधि प्रदान की गई।

इसी प्रकार प्राणि ाास्त्र के सहायक प्राध्यापक श्री माजि. दअली को उनके भाोध प्रबंध 'बायोडायवर्सिटी ऑफ इक्वेक्टिकइन्सपेक्ट ऑफ शंखिनी–डंकिनी नदी' पर उत्कृश्ट अनुसंधान के लिए और अंग्रेजी विभाग की सहायकप्राध्यापक श्रीमती अनिता साहा को उनके शोध प्रबंध 'एस्थेटिक्सऑफ एडवर्टिजमेंट' विषय पर किये गये अनुसंधान के लिए यह उपाधि प्रदान की गई। गणित विभाग के श्री हेमंत कुमार साव को इंजिनीयरिंग के क्षेत्र में 'एनालिसिसऑफ सम रिलायबिटी माफडल्स ऑफ मैनुफेक्चरिंगप्लांट' विषय पर किये गये भाोध कार्य के लिए यह उपाधि प्रदान की गईहै। अतिथि प्राध्यापक श्रीमती शवानी प्रधान को हिंदी विषय में, श्रीमती नीरा परमार को योगा में और श्री परगनिहा को भैतिक विज्ञान मेंकियेगये शोध के लिए यह उपाधि प्रदान की गई है। इसके साथ ही हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय के निर्दे ान में किये गए भाोध कार्य के लिए विभाग के कुलच. ार भाोधार्थियों को इस दीक्षात समारोह में एक साथ शोधोपाधि प्रदान की गई। ये शोधार्थी हैं– श्री प्रवीण कुमार साहू, वीरेन्द्र कुमार साहू, श्रीमती सुनीता सोनी और श्रीमती मनीषा सोनी।

# अनुसंधान के लिए पुरस्कृत हुआ हिंदी विभाग

01 फरवरी : पिछले सत्र में सर्वाधिक अनुसंधान कार्य और श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए हिंदी विभाग को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।इसके लिए महाविद्यालय के वार्शिकोत्सव एवं दीक्षांत समारोह में प्रशस्ति पत्र के साथ विभागाध्यक्ष डॉ. शंकरमुनिराय को पुरस्कार स्वरुप पांच हजार रुपये की राशि भी प्रदान की गई। उल्लेखनीय है कि इस सत्र में डॉ. राय के निर्देशन में किए गए श्रेष्ठ अनुसंधान कार्य के लिए चार शोधार्थियों को पं. रविशंकर शुक्ल विश्व विद्यालय, रायपुर ने पीएचडी की उपाधि प्रदान की है। इसके साथ ही विभाग के सभी प्राध्यापकों के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित कुल 12 महत्वपूर्ण शोध पत्रों और 5 पुस्तकों के प्रकाशन ने विभाग को यह गौरव प्राप्त करने में सहयोग प्रदान किया है। इस अवसर पर डॉ. राय ने कहा कि मैं अपना सौभाग्य मानता हूं कि जिस विभाग को डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी और गजानन माधव मुक्तिबोध जैसे साहित्य मनशियों ने संस्कारित किया है, उस विभाग के नेतृत्व का दायित्व मुझे मिलाहै। मैं अपने सभी सहयोगी मित्रों को धन्यवाद दे रहा हूं, जिन्होंने अपने श्रम से इस विभाग के साहित्यिक संस्कार को गौरवान्वित रखने में मुझे सहयोग प्रदान किया है। शोधोपाधि प्राप्त सभी विद्यार्थियों को पुनः बधाई और विभाग के सभी शोधार्थियों को शुभकामनाएं!

# संपादकीय

## खुशी के लिए लिए हो शिक्षा

वह स्नातकोत्तर हिंदी अंतिम वर्ष की छात्रा है। क्लास में कहीं भी बैठ जाती है। किसी विशेष स्थान पर बैठने की आदी नही है। विदाई समारोह में भी उसे पीछे की कुर्सी पर बैठे देखा। एक के बाद एक कार्यक्रम हुए और फिर विद्यार्थियों से अपने अनुभव बताने के लिए मैंने कहा। सभी ने महाविद्यालय सहित हिंदी विभाग की तारीफ की। फिर जब इस बैच के सर्वश्रष्ठ विद्यार्थी के चयन की बारी आई तो मेरी निगाह नीलिमा पर जाकर रुक गई। ऐसा इसलिए नहीं कि वह सबसे अधिक प्रतिभाशाली है। इसलिए भी नहीं कि उसने कुछ उल्लेखनीय कार्य किया है। लेकिन औसत प्रतिभा और व्यवहार की इस छात्रा की जो विशेष योग्यता मुझे याद आई वह थी उसके चेहरे की मुस्कुराती छवि।

मुझे लगता है कि दुनिया का सबसे समृद्ध व्यक्तित्व वही है जिसके चेहरे पर मुस्कुराहट है। किन्तु बहुत आसान नहीं है यह हंसी, मुस्कुराहट, स्मितहास के आनन्द की रेखा, जो सामने वाले के चेहरे पर भी पसर जाती है। दो वर्षों में नीलिमा को मैंने कभी उदास नहीं देखा है। परीक्षाओं में औसत अंक पाकर भी किसी से भी कम खुश नहीं रही है वह! कई प्रसंग याद आ रहे हैं जब मैंने उसे कहा कि मेहनत करो और अधिक से अधिक अंक हासिल करने का प्रयास करो। लेकिन उसे तो जो मिला उसी में संतुष्ट रहने की आदत है। बहुत बड़ी प्रतिभा है यह संतुष्टि! बिना किसी मेहनत के अधिक से अधिक प्राप्त करने की हमारी आदत ने हमें इतना कमजोर बना दिया है कि हम भूल ही जाते हैं कि सारी दुनिया के यश, वैभव और ऐश्वर्य सिर्फ हमारे लिए ही नहीं हैं।

आर्ष संस्कृति में शिक्षण संस्थाओं को विद्यालय इसलिए कहा गया है कि तब यहां ऋषि गण अपनी साधना से संचित दुनिया–जगत के अनुभव से स्वयं को पहले विद् बनाया करते थे और उसे विद्यार्थी को प्रदान करते थे। विद्या प्राप्त करने वाले को विद्यार्थी इसलिए कहा गया है कि विद्या से बड़ा कोई अर्थ नहीं है। इसे प्राप्त कर देने के बाद सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन इस संबंध में ऋषियों ने कहा है कि विद्या से विनय और विनय से पात्रता आती है। पात्रता से धन और धन से सुख की प्राप्ति होती है। इसका एक क्रम है। किन्तु हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति ने जीवन के उद्देश्य के मानक ही बदल दिए हैं। शिक्षण संस्थाओं का उद्देश्य विद्या नहीं, ज्ञान बांटना हो गया है। किसी को पात्र सुपात्र बनाने की जगह सीख देने की परंपरा ने शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्जन नहीं धनार्जन बना दिया है। रोजगारोन्मुखी शिक्षा का अर्थ स्वयं को बेचकर धनार्जन करना सिखाना नहीं है। हमारी शिक्षा में स्व–मूल्य की अवहेलना नहीं होनी चाहिए। आवश्यक है कि हम अपने जीवन में स्व – मूल्यांकन की परंपरा को विकसित करें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

मेरा मानना है कि मनुष्य को सफल जीवन जीने के लिए बहुत बड़ी डिग्री की जरूरत नहीं है। सामान्य शिक्षा और सीमित साधनों में रहकर भी लोग सफल जीवन जीये है। महत्वपूर्ण यह नहीं है कि कौन कितना धन अर्जित कर लिया है। महत्वपूर्ण यह है कि कौन अपने जीवन में कितना अधिक खुश रह पाया है। अकूत संपत्ति अर्जित करने के बाद भी लोगों के जीवन में अशांति, क्लेश–कलह और कैदखाने का जीवन जीते देखा गया है। लेकिन बिडंबना यह है कि वर्तमान परिवेश में धन कमाने के तौर–तरीके तो बहुत बताये–सीखाये जाते हैं, किन्तु खुश रहने के नहीं। मेरा निवेदन है कि हम जीवन में खुशी की तलाश के लिए चलें, न सिर्फ चलें, बल्कि दूसरों को भी चलने के लिए प्रेरित करें।

**– डॉ. शंकर मुनि राय**

# सिरपुर : एक पुरातात्विक स्थल

## विभागीय शैक्षणिक भ्रमण

**प्रस्तुति : कमल कुमार**

17 दिसंबर 2018 को महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा एकदिवसीय शैक्षणिक भ्रमण के लिए सिरपुर की यात्रा की गई। कुल 36 विद्यार्थियों के साथ विभागाध्यक्ष डॉ. भांकरमुनि राय ने अपने विभागीय सहयोगी डॉ. बी. एन. जागृत, डॉ. स्वाति दूबे और डॉ. शवानी प्रधान के साथ यह यात्रा जागीरदार बस में की। यह यात्रा सिफ स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए थी। यात्रा का नेतृत्व छात्र कमल कुमार और छात्रा काजल पाझडेय ने किया।

यात्रा से दो दिन पहले ही सभी विद्यार्थियों से उनके अभिभावकों से यात्रा की लिखित अनुमति प्राप्त कर ली गई थी। 17 दिसंबर की सुबह सभी विद्यार्थी उत्साह के साथ महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर एकत्रित हो गए। सामूहिक फोटो लेने के बाद नारियल फोड़कर लगभग आठ बजे यात्रा प्रारंभ की गई। राजनांदगांव से सिरपुर पहुंचने में लगभगतीन घंटे लगे। इस बीच बस में ही गाने का आनंद लिया गया।

सिरपुर छत्तीसगढ़ का एक प्राचीन सांस्कृतिक नगर है। भीड़–भाकड़ से दूर ग्रामीण परिवेश का यह नगर महानदी के तट पर स्थित है। यह पुरातात्विक स्थल है। इस स्थान का प्राचीन नाम श्रीपुर है। अनुमान के अनुसार प्राचीनकाल में यह एक वि ाल नगर हुआ करता था। यहां दक्षिण कोशल की राजधानी थी। सोमवंशी नरेशों ने यहां पर राम और लक्ष्मण मंदिर का निर्माण करवाया था। ईंटों से बना हुआ. प्राचीन लक्ष्मण मंदिर यहां आज भी दर्शनीय स्थान है। पुरातत्व विभाग द्वारा उत्खनन में यहां पर प्रा. चीन बौद्ध मठ भी पाये गए हैं।

इसलिए इस स्थल का दर्शन विद्यार्थियों को. कराना अनिवार्य समझा गया। सिरपुर पहुंचने के बाद प्रवेश द्वारा पर बने टिकट काउंटर से टिकट लेने के बाद हम प्रवेश किये। अंदर विशाल प्रांगण में साफ–सफाई और पुष्पवाटिका देखकर मन प्रसन्न हो गया। सबसे पहले हम लोग लक्ष्मण मंदिर देखनेगए। सामूहिक फोटो लिए और फिर पुरातत्व विभाग द्वारा निर्मित तीनसंग्रहालय कक्षों का भ्रमण किये। पहले और दूसरे कक्षों में ईसा सदी की मूर्तियां देखने को मिलीं। उत्खनन के दौरान मिलीं ये मूर्तियां यद्यपि खंडित है पर इन्हें देखने से उनकी मूल आकृति समझ में आ जाती हैं। वैसे सभी मूर्तियों के नीचे उनके परिचय लिखे गए हैं। इससे दर्शकों को समझने में असुविधा नहीं होती है। तीसरे कक्ष में चित्र प्रद ानी है।

**भग्नावशेष : बौद्ध मठ**

वहां से वाहर निकलने के बाद सामने बन रहे बड़े–से गार्डेन में हमने अपने घर से लाए हुए भोजन किये। भोजन के बाद हम वहां के अन्य स्थलों के भ्रमण पर निकल गए। गंधे वर महादेव मंदिर, महात्मा बुद्ध की मूर्ति, सुरंगटिला, लक्ष्मण मंदिर संग्रहालय, बुद्ध विहार, प्राचीन बाजार के ध्वंसावशेष आदि देखते हुए अत्यंत आनन्द का अनुभव किया ग या ।

गंधेश्वर मंदिर महानदी के विशाल तट पर स्थित है। वहां जाने के बाद हमें बताया गया कि प्रायः यहां आने वाले द ाक भगवान शिव का जलाभिशेक करते ही हैं। यह बात शवानी मैडम को पहले से मालूम थी। अतः जब तक हम इधर–उधर घूम रहे थे मैडम नदी से एक बाल्टी पानी देकर आती हुई दिखीं। राय सर ने शिवमंचाक्षर मंत्र के साथ जलाभिशेक करवाया। मंदिर गुंज उठा मंत्र ध्वनि से। बहुत ही आनन्दायक क्षण था वह। वहां हम लोग सुरंग टिला गए। वहां सुरंग के भीतर प्रवेश करने पर हमने देखा कि वहां भगवान श्रीकृष्ण, बलराम और उनकी बहनसुभद्रा की तस्वीर रखी हुई थी। जो लोग यहां पहले आ चुके थे वे बताये कि पहले यहां तस्वीर नही थी। यह बाद में रख दी गई है।

वहां से निकलने के बाद हमने अपने लिए कुछ खरिदारी की और फिर वापसी के लिए बस में बैठ गए।

**मॉनेटमॉल का भ्रमण :** बस में ही मेरे साथियों ने योजना बनाई कि रायपुर में मॉल घूमने के लिए राय सर से निवेदन किया जाए। जब मैंने उनके सामने अपना निवेदन रखा तो उन्होंने बड़े प्यार से समझाकर मना कर दिए। पर हम लोग अभी निराश नहीं हुए। हमने जागृत मैडम से अर्ज किया कि आधे घंटे के लिए मॉल घुमा दें। उन्हें मॉल का लोकेशन मालूम था। उन्होंने राय सर से परामर्श लेते हुए कहा कि अपने बच्चे ग्रामीण परिवेश के हैं और मॉल नहीं देखे हैं। वैसे मॉनेटमाल एक दम सड़क के किनारे ही है। उसके लिए हमें अतिरिक्त समय नहीं लगेगा।

मॉनेट मॉल में एक साथ इतने लोगों के प्रवेश के समय सिक्योरिटी चेकिंग में लाईन में लगना भी हमारे लिए एक नया अनुभव था। मॉल के अंदर स्वचालित सीढ़ियों पर तो चढ़ने का गलग ही आनन्द था। कुछ साथी तो बस उतरने के लिए ही चढ़ते थे। फिर सेल्फी लेते हुए चढ़ने–उतरने की होड़ मची। बहुत देर बाद वहां घूमने के बाद जब हम बाहर निकल कर बस के पास पहुंचे तो पता चला कि कुछ लोग तो अभी अंदर ही हैं। फिर उन्हें फोन किया गया। बस जब वापसी के लिए चली तो सभी थकान महसूस करने लगे थे। पर मस्ती कम नहीं हुई। राय सर ने चुपके से हमारी मस्ती की एक वीडियो भी बना ली। जब दिखाये तो हम खुश हुए पर शरमाये भी थोड़ा। राजनांदगांव लौटते रात के नौ बज गए। हम अपने इस आनन्ददायी यात्रा का कभी भी नहीं भूल सकते है।

# समाज कार्य विभाग : बालिका दिवस पर स्थानीय शाला में नुक्कड़ नाटक

24 जनवरी : महाविद्यालय के समाज कार्य विभाग द्वारा प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह के निर्देशन एवं प्रो. विजय मानिकपुरी व हरीश चन्द्राकर के मार्ग दर्शन में राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन महारानी लक्ष्मी बाई कन्या ाला में किया गया। इस अवसरपर मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने बताया गया कि 24 जनवरी को प्रतिवर्श देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को नारी शक्ति के रूप में याद किया जाता है। इस दिन को राष्ट्रीय बालिका दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है।

प्रो. विजय मानिकपुरी ने बताया कि आज की बालिकाएं राजनीतिक, शिक्षा, सुरक्षा, उद्योग, खेलजगत, अंतरिक्ष, सैन्य आदि सभी क्षेत्रों में अपना परचम लहरा रहीं है। रानी लक्ष्मीबाई, इंदिरागांधी, साइना नेहवाल, मैरीकॉम, राजनांदगांव की हॉकी खिलाड़ी रेणुका यादव एवं देश की प्रथम महिला राश्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा पाटिल जैसी–महिला भाक्ति द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में देश का नाम वि व में गौरवान्वित हुआ है।

इस अवसर पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कर प्रभावी संदे ादेने का प्रयास समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। साथ ही विद्यालय की सभी छात्राओं को संकल्प दिलाया गया कि राजनांदगांव की बेटियां, नारी शक्ति का मान देश में बढ़ाएंगी। कायक्रम के अंत में प्राचार्य द्वारा विद्यालय की उत्कृष्ट छात्राओं को पुस्कृत किया गया। भाला की प्राचार्या डॉ. के. अग्रवाल ने कार्यक्रम को सराहा एवं भविश्य में ऐसे आयोजन के लिये समाज कार्य के विद्यार्थियों को और आमंत्रित किया।

इस नुक्कड़ नाटक में भाग लेने वाले विद्यार्थी–लुके वरी, भोफाली, के ारी, रूपा, रश्मि, स्वाति, रजनी, खुलासदास, अनुराग खलखो, बालमुकुन्द वर्मा, दुर्गेश कुमार, रोशन निर्मलकर के अभिनय की प्रशंसा की गई।

# कैंसर दिवस पर कार्यशाला का आयोजन

कैंसर दिवस के अवसरपर भाासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में समाज कार्य विभाग द्वारा प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह के निर्दे ान एवं प्रो. विजय मानिकपुरी के मार्गदर्शन में एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। डॉ. अमृता भदौरिया चौहान (एम. डी), डॉ. ज्ञानेश श्रीवास्तव मैट्स युनिवर्सिटी रायपुर विभागाध्यक्ष, डॉ. नाथवानी, डॉ. अनिता भांकर, डॉ. मीना प्रसाद उपस्थित थे।

कार्यक्रममें मुख्य अतिथि डॉ. अमृता भदौरिया चौहान ने कहा कि कैंसर गलत रहन–सहन धारणा, मोबाइल से निकलने वाले रेडियेशन आदि अनेक कारणों से फैलते है। वि व कैंसर दिवस की भाुरूआत 2006 मेंहुई। आपनेकहा कि पुरूशो में पांच और महिलाओं में सात प्रकार के कैंसर होते हैं। इसक निदान योगाभ्यास एवं विभिन्न प्रकार के उपायों से संभव हैं।

डॉ. नाथवानी ने बताये कि कैंसर के कारण लोग भयभीत हो जाते हैं। आधुनिक चिकित्सा में इसका निदान है। डॉ. ज्ञानेश श्रीवास्तव ने एक भाोध के परिवेक्ष्य बताये कि 2020 तक कैंसर के मरीज 17 लाख तक बढ़ सकते हैं। कैंसर एक असाध्य रोग है, जोकि एक सामान्य व्यक्ति कैंसर से विजय पाना बहुत मुश्किल हो जाता है। छ.ग में पिछले तीन वर्शो में 25 प्रति ात तक मरीज की वृद्धि हुई है। मूंह के कैंसर में बढ़ोतरी हुई है। गुड़ाखू के कारण मूंह का कैंसर और ट्यूमर का खतरा अधिक होता है।

# राष्ट्रीय गणित दिवस पर प्रतियोगिता

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह के निर्देशन एवं गणित विभागाध्यक्ष डॉ. शबनम खान के मार्गदर्शन में गणित दिवस पर पोस्टर एवं स्पीच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए डॉ. के. के. देवांगन ने बताया कि गणित का हमारे दैनिक जीवन में न केवल उपयोग होता है, अपितु विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अपना विशेष महत्व रखता है। इसे देखते हुए इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों में गणित के प्रति रुचि लाना जरूरी है। पोस्टर व स्पीच प्रतियोगिताओं में कई विद्यार्थियों ने भाग लेते हुए गणित के सुबह से शाम तक प्रयोग एवं विज्ञान में अनेक. ानेक अनुप्रयोग को पोस्टर व स्पीच के माध्यम से अभिव्यक्त किये।

स्पीच प्रतियोगिता में बी.एस.सी. गणित द्वितीय वर्ष की पूजा साहू ने प्रथम, शालिनी साहू एवं धर्मेन्द्र कुमार ने संयुक्त रूप से द्वितीय संदीप कुमार देवांगन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इसी क्रम में पोस्टर प्रतियोगिता में बी.एस.सी. गणित द्वितीय वर्ष की भावना साहू ने प्रथम, तृतीय वर्ष के अनिल वर्मा ने द्वितीय व द्वितीय वर्ष की वर्निता ने तृतीय स्थान हासिल किया।

विभागाध्यक्ष डॉ. शबनम खान ने बताया कि गणित लैब के उद्घाटन के अवसर पर उन्हें पुरस्कृत किया जायेगा। प्रो. कविता साकुरे ने आगे भी इन प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों को भाग लेकर अपनी प्रतिभा निखारने हेतु प्रेरित किया। अंत में प्रो. विनय कुमार मसियारे ने आभार व्यक्त किया। इस प्रतियोगिता में बी.एस.सी. गणित के सभी विद्यार्थी उपस्थित थे।

# राज्य की सर्वश्रेष्ठ एथलीट बनी सविता निषाद

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव की छात्रा सविता निशाद अंतर विश्व विद्यालयीन राज्य स्तरीय एथलेटिक्स स्पर्द्धा में सर्वश्रेश्ठ प्रदर्शन के आधार पर पहला स्थान प्राप्त की है। शाासकीय वल्लभाचार्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महासमुंद में राज्य स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसम. सवितानिशाद ने 5000 और 10000 मीटर दौड़ में प्रथम तथा 1500 मीटर दौड़ में तृतीय स्थान प्राप्त किया। सविता गत 3 वर्षों से लगातार दुर्ग विश्व विद्यालय का प्रतिनिधित्व करती आ रही है, इसके साथ ही मानपुर में आयोजित ओपन एथटीकदौड़ प्रतियोगिता में भी द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। सविता की इस उपलब्धि पर महाविद्यालय के प्राचार्यडॉ.आर.एन. सिंह, क्रीड़ा संयोजक डॉ. शैलेन्द्र सिंह, आईक्यूएसीसंयोजकडॉ. नीलू श्रीवास्तव, डॉ. अनिता शंकर, डॉ. अनितासाहा, प्रो. मंजरीसिंह क्रीड़ा अधिकारी श्री अरुण चौधरी, रजिस्ट्रार श्री दीपक कुमार परगनिहा, श्रीसुनील सिंह, श्रीरामू पटेल तथा महाविद्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा बधाई दी गई।

# बौद्धिक मन्द बालक–बालिकाओं की सामाजिक स्थिति की जानकारी

**समाज कार्य विभाग** के विद्यार्थियों द्वारा प्रभारी प्राचार्य डॉ. चन्द्रिका नाथवानी के निर्देशन व प्रो. विजय मानिकपुरी के मार्ग दर्शन में बौद्धिक मन्द बालक/बालिकाओं के साथ महाविद्यालय के विद्यार्थी एक दिवसीय प्रेम मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रो. विजय मानिकपुरी ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को सामाजिक सरोकार से जोड़ना चाहिए एवं उनके संवेदना को समझना है।

विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती दिप्ती देवांगन ने बताया कि दिव्यांग बच्चों के साथ किस प्रकार से व्यवहार किया जाना चाहिए। उन्होंने वहां के बच्चों के बारे में पूरी जानकारी देते हुए कहा कि किस प्रकार से वहां के विद्यार्थी पढ़ते–लिखते व सुनतेहैं। साथ ही साथ वहां की व्यवस्था की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों के लिए आठ प्रशिक्षण कक्ष, मनोरंजन कक्ष, व्यायाम कक्ष, पुस्तकालय, फिजियोथेरिपी, कम्प्यूटर कक्ष, चिकित्सा कक्ष, बालनिवास कक्ष, वाणी कक्ष आदि कि व्यवस्था की गई है।

अधीक्षक श्री. शिव शंकर पाण्डे ने बताया कि विद्यार्थियों को किस प्रकार से उनके बातें को समझना एवं उनके गतिविधियों के बारे में जानना होता है। उन्होंने 21 प्रकार के दिव्यांगता के बारे में भी जानकारी दी। इस विद्यालय में 6 से 18 वर्श तक के विद्यार्थियों को रखने की शासन द्वारा स्वीकृति दी गयी है।

इस अवसर पर समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों द्वारा बच्चों के मनोरंजन के लिए विभिन्न प्रकार के खेल–कूद, गीत, नुक्कड़ नाटक, डांस प्रस्तुत किये गये तथा दिव्यांग बच्चों के द्वारा भी एक समूह नृत्य देश भक्ति गीत पर प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि शिव शंकर पाण्ड़े, महेन्द्र सोनवानी, श्रीमती दिप्ती देवांगन, श्रीमती शांति देविसकर, प्रो. विजय मानिकपुरी, श्री. हरीश चन्द्राकर एवं समाज कार्य के समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# कृमि मुक्ति दिवस पर बांटी गई दवाएं

8 फरवरी : स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, छत्तीसगढ़ के निर्दे ानुसार भासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के राश्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा कृमि मुक्ति दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय में 19 वर्श से कम उम्र के विद्यार्थियों को कृमि ना ाक दवाई अलबेडाजांल का वितरण किया गया। महाविद्यालय के बी.काम., बी.ए. व बी.एस.सी. भाग–एक वदो के लगभग 1460 विद्यार्थियों को दवाई का वितरण किया गया। इस कार्य में एन.एस.एस. के स्वयं सेवक सहित कार्यक्रम अधिकारी प्रो. नूतन देवांगन, प्रो.संजय सप्तर्शि व एन.सी.सी. अधिकारी प्रो. संजय देवांगन ने अपना वि ोश सहयोग प्रदान किया।

# स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रमः नंदई चौक

**समाज कार्य विभाग** : प्रो. विजय मानिकपुरी के मार्गद र्निमें एक दिवसीय स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत वार्ड नं. 48 और 39 में स्वच्छता रैली निकाल कर स्वच्छता का संदेश दिया गया। रैली में वार्ड की महिला, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, महिलाकमांडो, महिला समूह आदि महिलाओं ने भाग लिया।

इस अवसर पर डॉ. ओमकार लाल श्रीवास्तव (कमला कॉलेज) ने कहा कि उन्होंनें ने स्वयं घर में सबसे पहले कचरे का खाद बनाने और वाटर हार्वेस्टिंग का कार्य किया। डॉ. एच.एस भटिया ने बताये कि आज आयोजन एवं जागरूता कार्यक्रम बहुत हो रहे है। यह अच्छी पहलहै, लेकिन यदि इसका 10 प्रतिशत उद्देश्य हम अपने व्यवहार में लाये तो यह प्रयास सार्थक सिद्ध होगा।

कोमल सिंह राजपूत– ने बताये कि समाज में सुधार करना आवश्यक हैऔर यह कार्य समाज. कार्य विभाग इस जगजारूकता के माध्यम से कर रहा है। विजय राय (वार्ड नं. 39 पार्षद) बताये कि हम सभी लोग अगर इसी तरह लोगों के बीच. जाकर जागरूकता फैलाये तो ही हमारे शहर, देश स्वच्छ हो सकता है।

अकरम कुरैशी, रवि सिन्हा, हरीश साहू, श्रीमती गीता शर्मा आदि ने भी अपने सुझाव दिये तथा इस आयोजन की सराहना की।

इस अवसर पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करने. में केशरी, लुकेश्वरी, स्वाती, साधना, पूजा, पवन, हरिश, शोभित, एकता, विशम्भा, नीलम, रजनी, उमेष, रेणु, एवं इस कार्यक्रममेंविभाग के समस्त विद्यार्थी सम्मलित हुए।

# "राजा बलरामदास ने रायपुर की जनता के लिए पानी की व्यवस्था की थी"–महादेव प्रसाद पांडेय

*राजनांदगांव के राजाओं ने आजादी के आंदोलन में बौद्धिक जागृति का अलख जगाने में बड़ी भूमिका अदा की थी। राजनांदगांव के राजा बलराम दास ने तो रायपुर की जनता के पानी पीने के लिए बहुत बड़ी टंकी का निर्माण करवाया था। उक्त विचार दिग्विजय महाविद्यालय के इतिहास और समाज शास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित गांधीवादी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पद्म श्रीमहादेव प्रसाद पाण्डे के सम्मान समारोह के अवसर पर इतिहासकार डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र ने व्यक्त किये। डॉ. मिश्रा ने कहा कि 1857 की क्रान्ति से लेकर 1947 की आजादी तक छत्तीसगढ़ का गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। शहीद वीरनारायण सिंह ने रायपुर जेल से भागकर अंग्रेजो से लोहा लिया था। सुरेन्द्र सिंह ने तो 1828 से 1884 तक अपने पूरे जीवन स्वतंत्रता की लड़ाई की। आज की युवा पीढ़ी ने स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता ले लिया है। पहली बार 20 दिसंबर 1920 में महात्मा गांधी छत्तीसगढ़ आए थे उनके आगमन से पूरे छत्तीसगढ़ में एकता की लहर दौड़ पड़ी। उन्होंनें विद्यार्थियों को बतलाया कि 1 जनवरी 1906 को ही छत्तीसगढ़ का नक्शा बन गया था।*

*कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने बतलाया कि इतिहास का अध्ययन पुस्तकों में दर्ज तथ्यों, तर्को से सभीकरते हैंपर कोई सशरीर उपस्थित इतिहास कार जब इतिहास को जी कर उसकी व्याख्या करता है तो उसका अनुभव ही अविस्मरणीय होता है। उन्होंने बतलाया कि राजनांदगांव की जनता ने स्वतंत्राता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई थी। सन् 1909 को ही राजनांदगांव में लोगों को जागरुक करने के लिए सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना हुई थी। छत्तीसगढ़ की जनता तो दो मोर्चो पर लड़ाई लड़ रही थी। एक राश्ट्रीय आंदोलन और दूसरी तरफ देशी रियासतें। इस अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पद्म श्री महादेव प्रसाद पाण्डे ने बतलाया कि 13 वर्श की उम्र में वे जेल गए और जेल में वे जमीन पर सोते थे तो घर पर उनके पिता भी जमीन पर सोने थे। आजादी का मतवाला एक होता था लेकिन उसका संघर्ष पूरा परिवार करता था। उन्होनें कहा कि लोगों में आशिकी होनी चाहिए यह आशिकी स्वतंत्रता के पश्चात की नही वरन स्वतंत्रता के पहले की होनी चाहिए जो चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव ने देश के साथ की थी। पहले लोग गांधीजी के विचार को सुनकर उनका पालन करते थे, ऐसी आस्था जनता की नेताओं के प्रति होती थी। आज के परिप्रेक्ष्य में हमें गांधीजी के सिद्धातों का परिपालन करते हुए स्वतंत्रता का महत्व समझना होगा। कार्यक्रम में गांधीवादी दस्तावेजों की प्रदर्शनी आशीशदास ने लगाई जिसमें 100 वर्श पुराने अखबार नवजीवन तथा ऐतिहासिक चित्रों के साथ विभिन्न भाषाओं में गांधीवादी दस्तावेज, समाचार पत्र तथा गांधीवादी पत्र शामिल थे।*

*अतिथियों का सम्मान प्र. प्राचार्या डॉ. चन्द्रिका नाथवानी ने शाल और श्रीफल से किया। इस अवसर पर डॉ. अमिता बक्शी, डॉ. एच.एस. अलरेजा, प्रो. ललिता साहू, मीनाक्षी महोबिया, प्रो. हीरेन्द्र बहादूर ठाकुर एवं बडी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनिल मंडावी ने किया ।*

# वृद्धा आश्रम में विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम

8 फरवरी 2019 : भासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह के निर्देशन एवं प्रो. विजय मानिकपुरी के मार्ग दर्शन में महावीर समता मंच वृद्धा आश्रम में एक दिवसीय नृत्य–संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी विभागाध्सक्ष डॉ. शंकर मुनि राय, श्री कपूर चन्द संच. ालक महावीर समता मंच वृद्धा आश्रम, श्रीमती गीता अग्रवाल केयरटेकर, प्रो. विजय मानिकपुरी आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डॉ. शंकर मुनि राय ने कहा कि आज हमारे समाज में ऐसे व्यक्तियों कि आवश्यकता है जो अधुनिकता की दौर में अपने कर्तव्य से दूर होते जा रहे हैं। वृद्ध माता–पिता की सेवा करना नहीं चाहते और नैतिकता को भूलते चले जा रहे हैं। संचालक

श्रीकपूर चंद ने बताया कि संस्था में लगभग 60 वृद्धजनों हैं। उन्होने कहा कि ऐसे कार्यक्रम का आयोजन हमे ाा समय – समय पर होते रहना चाहिए। प्रो. विजय मानिकपुरी ने कहा कि समाजकार्य विभाग के द्वारा सभी स्थानों में कार्यक्रम के माध्यम से व्यक्तियों को जागरूक करने का प्रयास किया जाता है। समय–समय पर सार्वजनिक स्थानों पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर लोगों सहित विद्यार्थियों को नए परिवेश से परिचय कराया जाता है। वृद्धजनों के मनो. रंजन के लिए विविध कार्यक्रम किये गए। जैसे नृत्य–संगीत और नाटक, बिन्दी लगाओ प्रतियोगिता, चूड़ी से साड़ी निक. ालना आदि। 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' और गॉधी जी पर नुक्कड़ नाटक दिखाया गया। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले वृद्धजनों को पुरस्कार और उपहार भी वितरित किये गये।

# डॉ. चन्दकुमार जैन को रचनात्मक योगदान के लिए राष्ट्रीय परिषद् ने कियासम्मानित

**राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी विभाग के राष्ट्रपति सम्मानित प्राध्यापक डॉ. चन्द्रकुमार जैन को विशिष्ट रचनात्मक योगदान के लिए अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद् द्वारा सम्मानित किया गया।**

उन्हें छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के अध्यक्ष डॉ. विनयकुमार पाठक, परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.डी.पी.अग्रवाल, राष्ट्रीय महामंत्री श्री मदन मोहन अग्रवाल ने सम्मानित किया। इस अवसर पर विशेष अतिथि श्री प्रेमप्रकाश सिंघल, प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह सहित परिषद् के सम्मानित सदस्य, प्राध्यापक, बड़ी संख्या में विद्यार्थी और निबंध प्रतियोगिता के विजेता उपस्थित थे। सम्मान के दौरान करतल धवनि से सभागार गूँज उठा।

राष्ट्रीय परिषद् के तत्वावधान में महाविद्यालय के डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सभागार में आयोजित समारोह में डॉ. जैन का, दिव्यांगों की जरूरतों और अभिलाषाओं पर आधारित निबंध प्रतियोगिता के उत्कृष्ट संयोजन और प्रतिभागी युवाओं को सकारात्मक सहयोग और मार्गदर्शन देने के लिए यह सम्मान किया गया। गौरतलब है कि दिव्यांगों की शिक्षा, सेवा और पुनर्वास पर मंथन करने और उनके प्रति महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं में संवेदना और सरोकार के भाव विकसित करने तथा उनकी राय जानने की दृष्टि से हुई इस प्रतियोगिता में प्राचार्य डॉ.आर.एन.सिंह के मार्गदर्शन और संस्था परिवार के सहयोग से डॉ. चन्द्रकुमार जैन ने एक प्रभावी मोटिवेटर की भूमिका अदा की। परिषद् के पदाधिकारियों और राजभाषा आयोग के अध्यक्ष द्वारा डॉ. जैन की पहल, सम्प्रेषण कला, सक्रियता समर्पण और सेवा भावना की मुक्त कंठ से सराहना की गई। स्मरण रहे कि डॉ. जैन को इसी वर्ष भारत और भूटान संयुक्त राष्ट्र संघ सूचना केंद्र और श्री रामचंद्र मिशन के अखिल भारतीय निबंध लेखन कार्यक्रम के भी सुचारु संयोजन के लिए बेस्ट कोऑर्डिनेटर के रूप में सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ.रमन सिंह द्वारा महाविद्यालय के हीरक जयन्ती समारोह में डॉ. जैन को यह सम्मान प्रदान किया गया। अनेक बहुआयामी कार्यक्रमों के अतिरिक्त समरूप रचनात्मक गतिविधि में 2018 में ही इस दोहरी उपलब्धि अर्जित करने पर महाविद्यालय परिवार और शुभ चिंतकों ने उन्हें बधाई दी है।

# श्रेष्ठ नोडल ऑफिसर के रूप में सम्मानित हुए डॉ. शैलेन्द्र सिंह

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के इतिहास विभाग के प्राध्यापक डॉ. शैलेन्द्र सिंह को स्वीपप्लान के अंतर्गत जिले में किये गए श्रेष्ठ कार्य के लिए जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा सम्मानित किया गया। 25 जनवरी 2019 को मतदाता दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में जिला कलेक्टर श्री भीम सिंह ने इन्हें प्रतीक चिन्ह, प्रमाणपत्र सहित 7 हजार रूपये की नगद राशि प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर जिला सत्र न्यायाधीश श्री निर्मल मिंज, सी.ई.ओ. श्री चंदन कुमार, उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री ओंकार यद, स्वीपप्लान की जिला नोडल अधिकारी श्रीमती रशिम सिंह तथा प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह की उपस्थितिथे।

डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने इस सम्मान के लिए सहयोग प्रदान करने वाले जिला प्रशासन सहित प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह, प्राध्यापकगण, कर्मचारी तथा राजनांदगांव के पत्रकारों के प्रति आभार प्रकट किया।

# एन.एस.एस. का सात दिवसीय शिविर

राजनांदगांव : 17 जनवरी : शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव के राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा ग्राम–भंवरमरा में 07 दिवसीय वि ोश शिविर का आयोजन किया गया है।

इस कार्यक्रम में शासकीय कमला देवी महिला महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सुमन बघेल, शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह, ग्राम के सरपंच श्री ई वर निशाद, कार्यक्रम अधिकारी प्रो. नूतनकुमारदेवांगन व प्रो. संजय कुमार देवांगन सहित ग्राम के सेवा निवृत्त शिक्षक, ग्रामवासी व लगभग 80 स्वयं सेवक उपस्थित रहे।

यह शिविर स्वच्छ व स्वस्थ ग्राम में युवाओं की भूमिका के थीम पर आयोजित था। प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने स्वच्छता के लिए ग्राम के युवाओं व महिलाओं को वि ोश रूप से संबोधित किये। सभी स्वयं सेवक द्वारा इस शिविर में स्वच्छता व सामाजिक जागरूकता लाने के संकल्प के साथ भाग लिए। शि. विर में गांव की गलियों व चौपाल की सफाई किया गया तथा प्रातः प्रभात फेरी से जन जागृति लाने के लिए नारे लगाये गये।

# ललित प्रधान को दिल्ली विश्वविद्यालय से मिली पीएचडी

भाासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में पदस्थ सहायक प्राध्यापक श्री ललित प्रधान को दिल्ली विश्वविद्यालय ने संस्कृत वांगमय में किये गए उनके शोध कार्य के लिए पीएचडी की उपाधि प्रदान की है। आपके शोध का विशय है–'महाभाश्य के धात्वधिकार पर प्रदीप का समीक्षात्मक अध्ययन'। (नारायण कृत विवरण तथा नागेष कृत उद्योत के संदर्भ में) इनकी इस उपलब्धि पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्यादेश पांडे सहित महाविद्यालय परिवार ने बधाई और शुभकामनाएं दी हैं।

## सुभाष चन्द्र बोस जयंती मनाई गई

इतिहास विभाग : शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा सुभाश चन्द्र बोस जयंती मनाई गई। प्रारंभ में विभागाध्यक्ष डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने बताया कि सुभाष चन्द्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अंग्रणी तथा बड़े नेता थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए उन्होंने जापान के सहयोग से ''आजाद हिन्द फौज'' का गठन किया था। उनके द्वारा दिया गया ''जय हिन्द'' का नाराभारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने कहा कि सुभाष ने ''फारवर्ड ब्लाक'' नामक पार्टी की स्थापना की और स्वतंत्रता संग्राम को और अधिक तीव्र करने के लिए जनजागृति शुरु की। देशबन्धु चितरंजन दास के कार्य से प्रेरित होकर इन्होने राजनीति मे प्रवेश किया अपने सार्वजनिक जीवन में सुभाष चन्द्र बोस को कुल 11 बार कारावास हुआ था। सुभाशचन्द्र बोस ने तुम मुझे खुन दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा का नारा लगाया। आज के परिवेश में सुभाष चन्द्र बोस के आदर्शो पर चलकर स्वतंत्रता के महत्व को समझना पड़ेगा यही प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कार्यक्रम का संचालन प्रो. हीरेन्द्र बहादूर ठाकुर तथा आभार प्रो. अमर वर्मा ने किया। इस अवसर पर छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

# महंत राजा दिग्विजय दास की पुण्यतिथि पर कृतज्ञ स्मरण

राजनांदगांव : उच्च शिक्षा के स्वप्नदृष्टा दानवीर महंत राजा दिग्विजय दास की पुण्यतिथि पर भाासकीय दिग्विजय महाविद्यालय परिसर में स्थित उनकी प्रतिमा पर मार्ल्यापण कर भावांजली अर्पित की गई। प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने राजा साहब के जीवन पर प्रका ा डाला और महाविद्यालय की स्थापना में उनके उदार योगदान को चिरस्मरणीय निरुपित किया।

उक्त अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापक, कर्मचारी विद्यार्थी सहित नगर के जे.के. वैश्णव देव कुमार निमार्णी, चन्द्रशेखर वैश्णव, शिव कुमार वैश्णव, राहुल वैश्णव, लक्ष्मी नारायण वैश्णव, वैभव, संदीप , मयंक, योगे वर और नरोत्तम विशेष रुप से उपस्थित थे। सभी अभ्यागतों ने राजा साहब को पुण्यांजलि अर्जित की।

# यूथ रेड क्रास : आवासहीन को गरम कपड़े बांटे गए

राजनांदगांवः– महाविद्यालय की यूथ रेंड क्रास इकाई द्वारा विद्यार्थियों से पुराने वस्त्रों का संग्रहण कर व नए कंबल खरीदकर अर्द्धरात्रि में भाहर का भ्रमण कर आवासहीन गरीबों में इन का वितरण किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.आर.एन.सिंह के संरक्षण व यूथ रेडक्रास अधिकारी डॉ.एच.एस.भाटिया के निर्दे न में आयोजित इस कार्यक्रम में यूथ रेडक्रास के लगभग 20 विद्यार्थियों की सहभागिता रही, विद्यार्थियों के इस कार्य से प्रेरित होकर समाज के अन्य लोगों ने भी इस कार्य में सहभागिता निभाने की पहल की। उल्लेखनीय है कि विगत कई वर्शों से महाविद्यालय की यूथ रेडक्रास इकाई द्वारा ठंड के मौसम में आवासहीन गरीबों को वस्त्रों व कंबल वितरण का कार्य अनवरत किया जा रहा है।

# अतिथि व्याख्यान : फोटो एवं विडियो ग्राफी प्रशिक्षण

शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पत्रकारिता विभाग में संचार कौशल एवं व्यक्तित्व विकास पर व्याख्यान हुआ। मुख्य वक्ता निमिषा उपाध्याय ने साक्षात्कार के समय बॉडी लेंग्वेज, ड्रेससेंस, वाकिंगस्टाइल एवं हैंडसेक के अलावा अन्य व्यक्तित्व विकास से जुड़े पहलुओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि साक्षात्कार के समय चेहरे के हाव–भाव, आईकान्टेक्ट और संपूण व्यक्तित्व का प्रभाव साक्षात्कार पर पड़ता है। अतः इन सभी क्रियाआ. पर पर्याप्त तैयारी के साथ ही साक्षात्कार के लिए उपस्थित होना चाहिए। इससे सफलता की उम्मीद बढ़ती है। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. आरएन सिंह ने भी फोटो ग्राफी के महत्व पर प्रका ा डाला। उन्होंने बताया कि स्टूडेंट्स प्र िक्षण पाकर फोटा ग्राफी में अपना करियर बना सकत हैं।

विभागाध्यक्ष डॉ. बीएनजागृत ने कहाकि प्र िक्षण से स्टूडेंट्स को फोटोग्राफी नई नइ तकनीकी जनाकारी मिल रही है। फोटोग्राफी अपने आपमें एक कला है। इस क्षेत्र में कई व्यक्ति ने ऊंचे मुकाम हासिल किए है। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. बी. एन. जागृत सहित सहायक प्राध्यापक अमितेष सोनकर, दीक्षा दे ापांडे, रे ामीसाहूऔरपत्रकारिता के छात्र–छात्राएं मौजूद थे।

# भूतपूर्व विद्यार्थियों का वार्षिक आयोजन

2 फरवरी : दिग्विजय महाविद्यालय में वार्शिकोत्सव के दूसरे दिन भूतपूर्व विद्यार्थियों का वार्शिक आयोजन संपन्न हुआ। प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह के आह्वान पर महाविद्यालय के पूर्व छात्र–छात्राओं ने इस आयोजन में अपने संस्मरण सुनाकर वर्तमान छात्र–छात्राओं के मार्ग प्रशस्त किए। समारोह के प्रारंभ में महाविद्यालय की वरिश्ठ प्राध्यापक, डीन और एलुमनी डॉ. चंद्रिका नाथवानी ने अपने प्रस्तावना संबोधन में महाविद्यालय की वर्तमान गतिविधियों की जानकारी दी। पूर्व छात्रा एकव्होकेट श्रीमती शारदा तिवारी अपने विद्यार्थी जीवन सहित नगर की शिक्षण व्यवस्था के इतिहास का उल्लेख करते हुए दिग्विजय महाविद्यालय के इतिहास पर प्रकाभा डाला। श्री दिनेश शर्मा ने इस संस्था के विकास में सहयोग करने का आह्वान किया।

इसी कम में रईस अहमद शकील, अरविन्द ठक्कर, कुलदीप सिंह भाटिया, डॉ. आनन्दवर्गिस, महेन्द्रकुमार भार्मा, राजकुमार शर्मा, बलबीर सिंह बग्गा, अतुल श्रीवास्तव, मुरलीधर सोमानी, भगवान झा, शरद श्रीवास्तव, सुरेश यादव, संदीप गुप्ता ने अपने रोचक संस्मरण सुनाए तथा इस संस्था की अतीत को याद कर आनंदित हुए। इसी कम में महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापक डॉ. के. के. देवांगन, डॉ. डीकेवर्मा, डॉ. बीएन जागृत और डॉ. चंदकुमार जैन अपने समय की शिक्षा व्यवस्था का परिचय दिया। डॉ. माजिदअली ने कार्यक्रम के आरंभ में समस्त एलुमनी का परिचय दिया और डॉ. नाथवानी ने स्वगत किया। डॉ. चंद्रकुमार जैन ने इस एलुमनी सम्मेलन का संचालन करते हुए महाविद्यालय की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला।

स्वामित्व एवं प्रशासक : शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय किलापारा, राजनांदगांव (छत्तीसगढ)। महाविद्यालय के पत्रकारिता विभाग द्वारा त्रैमासिक प्रकाशित। संरक्षक एवं प्रकाशक :– (प्राचार्य) डॉ. आर.एन.सिंह, प्रधान संपादक एवं निर्देशक:– डॉ. शंकर मुनि राय, समाचार संपादक :– डॉ. बी.एन जागृत । e-mail : shankermunirai@gmail.com.phone- 9893863548 मुद्रक : सम्मान पब्लिकेशन्स (प्रा.) लि., बलदेव बाग, राज. 7000723690